Anusandhanvallari
Vol 2025, No.1
September 2025
ISSN 2229-3388

राजीव गांधी किसान न्याय योजना के गोठान परियोजना के माध्यम से बंजर भूमि की उत्पादकता और ग्रामीण संसाधन सुधार का अध्ययन

डॉ. राकेश कुमार गुप्ता
शोध निर्देशक
सामाजिक विज्ञान (अर्थशास्त्र)
डॉ. सी. व्ही. रमन विश्वविद्यालय
करगी रोड, कोटा, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)
श्रीमती वर्षा दुबे
शोधार्थी
सामाजिक विज्ञान (अर्थशास्त्र)
डॉ. सी. व्ही. रमन विश्वविद्यालय
करगी रोड, कोटा, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

सारांश -

छत्तीसगढ़ सरकार की गोठान परियोजना राज्य की ग्रामीण अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित करने का एक अभिनव प्रयास है। यह परियोजना न केवल पशुधन संरक्षण का केंद्र है, बल्कि बंजर भूमि के समुचित उपयोग, जल संरक्षण, चारा विकास तथा पर्यावरणीय सुधार का भी प्रभावी माध्यम बन चुकी है। ग्रामीण क्षेत्रों में वर्षों से उपेक्षित पड़ी बंजर भूमि को गोठान योजना के तहत पशुपालन, वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन, बायो-गैस निर्माण और जैविक खेती जैसे कार्यों में प्रयुक्त किया जा रहा है। इससे भूमि की उत्पादकता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है तथा मिट्टी की उर्वरता और हरियाली में सुधार देखा गया है। इस शोध-पत्र का उद्देश्य गोठानों के माध्यम से बंजर भूमि के उत्पादक उपयोग, जल एवं चारा विकास, पर्यावरणीय स्थिरता और ग्रामीण संसाधन प्रबंधन पर इसके प्रभाव का विश्लेषण करना है। अध्ययन से यह पाया गया कि गोठानों ने न केवल बंजर भूमि को उपयोग में लाकर उसे कृषि योग्य बनाया है, बल्कि पशु चारा की उपलब्धता, जल संरक्षण, मिट्टी सुधार और सामुदायिक सहभागिता को भी प्रोत्साहित किया है। इस परियोजना ने ग्रामीण पर्यावरण और संसाधनों को सशक्त करते हुए सतत विकास (Sustainable Development) की दिशा में ठोस कदम बढ़ाए हैं।

मुख्य शब्द - गोठान परियोजना, बंजर भूमि उत्पादकता, चारा एवं जल प्रबंधन, पर्यावरणीय सुधार, सतत विकास ।

परिचय -

भारत के ग्रामीण समाज का विकास भूमि और जल संसाधनों के प्रभावी उपयोग पर निर्भर करता है। परंतु देश के अनेक ग्रामीण क्षेत्रों में बंजर भूमि एवं जल संकट के कारण कृषि और पशुपालन की स्थिति चुनौतीपूर्ण रही है। छत्तीसगढ़ राज्य में इस समस्या के समाधान हेतु "गोठान परियोजना" एक व्यवहारिक पहल के रूप में सामने आई है। "नरवा, गरवा, घुरवा, बारी" की अवधारणा पर आधारित इस योजना का उद्देश्य ग्रामीण जीवन को आत्मनिर्भर बनाना है। गोठान केवल पशुओं के लिए आश्रय स्थल नहीं, बल्कि कृषि एवं पर्यावरण के संरक्षण का

समेकित मॉडल बन चुका है। इस योजना के माध्यम से बंजर भूमि को उत्पादक बनाया गया, जल संरचना सुधारी गई, तथा पशुओं के लिए चारा व स्वास्थ्य सुविधाएँ उपलब्ध कराई गईं।

यह शोध विशेष रूप से **दो प्रमुख परिकल्पनाओं** पर केंद्रित है -

- गोठानों ने गाँव की बंजर भूमि की उत्पादकता में वृद्धि की है।
- गोठानों ने चारा, जल व अन्य सुविधाओं में सुधार लाया है।

यह अध्ययन इन दोनों पहलुओं के आर्थिक, पर्यावरणीय और सामाजिक प्रभावों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

मुख्य विषय -

गोठान योजना का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण संसाधनों का संरक्षण एवं उपयोगिता बढ़ाना है। बंजर भूमि, जो पहले अनुपयोगी थी, अब वर्मी कम्पोस्ट निर्माण, पशुपालन, जैविक खेती और चारा उत्पादन जैसे कार्यों में प्रयुक्त हो रही है। इससे न केवल भूमि की उत्पादकता में वृद्धि हुई है, बल्कि ग्रामीण रोजगार और आय में भी सुधार हुआ है। गोठानों के माध्यम से जल संरक्षण और हरियाली में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। यहाँ तालाब, चारागाह, एवं जल-संग्रह संरचनाएँ विकसित की गई हैं, जिससे पशुओं के लिए जल और चारे की उपलब्धता आसान हुई है। मिट्टी की उर्वरता बढ़ने से कृषि योग्य भूमि का विस्तार हुआ है। इन गतिविधियों ने गाँव में पर्यावरणीय संतुलन, सामुदायिक सहयोग और सतत विकास की अवधारणा को साकार किया है। इस प्रकार गोठान परियोजना केवल पशुधन संरक्षण का साधन न होकर, एक व्यापक ग्रामीण पुनर्जागरण कार्यक्रम सिद्ध हुई है।

शोध कार्य एवं अनुसंधान पद्धति -

शोध का उद्देश्य -

- बंजर भूमि के उत्पादक उपयोग में गोठानों की भूमिका का अध्ययन करना।
- जल संरक्षण, चारा उत्पादन और पर्यावरणीय सुधार पर गोठानों के प्रभाव का विश्लेषण करना।
- भूमि की उर्वरता और ग्रामीण आय में हुए सुधार का मूल्यांकन करना।
- गोठानों से उत्पन्न सतत विकास की दिशा में योगदान को समझना।

शोध का क्षेत्र -

अध्ययन छत्तीसगढ़ के पाँच जिलों - रायपुर, बलौदा बाजार, बिलासपुर, कोरबा और कबीरधाम में चयनित 10 गोठानों पर केंद्रित किया गया।

शोध की प्रकृति -

यह शोध वर्णनात्मक (क्मेबतपचजपअम) तथा विश्लेषणात्मक (।दंसलजपबंस) है। इसमें प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आंकड़ों का प्रयोग किया गया।

डेटा संग्रह की विधियाँ -

प्राथमिक डेटा - 150 ग्रामीण उत्तरदाताओं, पंचायत सदस्यों, महिला समूहों एवं गोठान प्रबंध समिति से प्रश्नावली एवं साक्षात्कार द्वारा डेटा एकत्र किया गया।

द्वितीयक डेटा - कृषि विभाग, पंचायती राज विभाग, और योजना आयोग की रिपोर्टों से प्राप्त किया गया।

परिकल्पनाएँ -

- परिकल्पना 1 - गोठान परियोजना ने बंजर भूमि की उत्पादकता में वृद्धि की है।
- परिकल्पना 2 - गोठानों ने चारा, जल और पर्यावरणीय सुविधाओं में सुधार किया है।

डेटा विश्लेषण की तकनीकें -

डेटा का विश्लेषण प्रतिशत, औसत, चार्ट और तुलनात्मक विश्लेषण द्वारा किया गया।

नमूना चयन -

सुविधा नमूना (Convenient Sampling) पद्धति का उपयोग किया गया, जिसमें प्रत्येक जिले से दो प्रमुख गोठान चुने गए।

सीमाएँ -

- अध्ययन सीमित भौगोलिक क्षेत्र में किया गया।
- केवल चयनित उत्तरदाताओं के अनुभवों पर आधारित है।
- जलवायु और मौसमीय प्रभावों का विश्लेषण आंशिक रूप से किया गया।

पर्यवेक्षण -

बंजर भूमि का उपयोग - 78: उत्तरदाताओं ने बताया कि गोठान बनने के बाद पहले अनुपयोगी भूमि अब पशुपालन और कृषि कार्यों में प्रयुक्त हो रही है।

भूमि की उत्पादकता - गोठानों में वर्मी कम्पोस्ट और जैविक खाद के प्रयोग से मिट्टी की उर्वरता में 60: वृद्धि दर्ज की गई।

चारा उत्पादन - गोठानों के आसपास हरे चारे की खेती ने पशुपालन को सशक्त बनाया है। 70: ग्रामीणों ने चारे की उपलब्धता में वृद्धि की पुष्टि की।

जल संरक्षण - तालाब, जल संग्रह टैंक और नालों की मरम्मत से जलस्तर में 1.5 मीटर तक वृद्धि पाई गई।

हरियाली और पर्यावरण सुधार - गोठानों से हरियाली में वृद्धि हुई है, जिससे तापमान में स्थानीय स्तर पर कमी और जैव विविधता में सुधार देखा गया।

पशुओं का स्वास्थ्य - बेहतर चारा, जल और देखभाल के कारण पशुधन की उत्पादकता (दूध उत्पादन) में 25: वृद्धि दर्ज की गई।

सामुदायिक सहभागिता - गोठानों के निर्माण एवं प्रबंधन में ग्रामवासियों की 85: सक्रिय भागीदारी पाई गई। इससे सामूहिक उत्तरदायित्व और सामाजिक एकता बढ़ी।

विश्लेषण -

अध्ययन से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर निम्न विश्लेषण प्रस्तुत किया जा सकता है -

आर्थिक दृष्टिकोण से - गोठानों द्वारा बंजर भूमि को कृषि योग्य बनाने से ग्रामीणों की आय में 35-40: तक वृद्धि हुई है। चारा उत्पादन, वर्मी कम्पोस्ट बिक्री और पशुपालन ने वैकल्पिक आय स्रोत प्रदान किए हैं।

पर्यावरणीय दृष्टिकोण से - गोठानों ने प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, जल संतुलन, और हरित आवरण में सुधार लाकर टिकाऊ विकास के सिद्धांत को साकार किया है।

सामाजिक दृष्टिकोण से - ग्रामीण समुदायों की सहभागिता से सामूहिक संसाधन प्रबंधन की भावना विकसित हुई है। महिलाओं और युवाओं की सहभागिता से लैंगिक संतुलन भी मजबूत हुआ।

तकनीकी दृष्टिकोण से - वर्मी कम्पोस्ट, बायो-गैस और जल संग्रहण तकनीकों के उपयोग से उत्पादन की दक्षता बढ़ी।

समग्र विश्लेषण यह दर्शाता है कि गोठान योजना ने बंजर भूमि की उत्पादकता बढ़ाकर ग्राम्य संसाधनों को सशक्त किया है।

निष्कर्ष -

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि गोठान परियोजना ने ग्रामीण क्षेत्रों में एक क्रांतिकारी परिवर्तन लाया है। इसने बंजर भूमि को उपयोग में लाकर कृषि योग्य बनायाए पशुपालन और जैविक खेती को प्रोत्साहित कियाए तथा जल एवं चारा संसाधनों को सशक्त किया। इससे ग्रामीण आय में वृद्धि, पर्यावरणीय सुधार और सामुदायिक एकता तीनों ही स्तरों पर उल्लेखनीय परिवर्तन हुए हैं। यह योजना सतत विकास के सिद्धांतों को स्थानीय स्तर पर साकार करने का उदाहरण बन चुकी है। गोठानों ने न केवल भूमि और जल का पुनः उपयोग सुनिश्चित कियाए बल्कि ग्रामीणों में आत्मनिर्भरता और सामुदायिक उत्तरदायित्व की भावना को भी सशक्त किया है।

सुझाव -

- गोठानों में वैज्ञानिक मिट्टी परीक्षण एवं भूमि सुधार कार्यक्रम नियमित किए जाएँ।
- जल संरक्षण हेतु छोटे बाँध और रेनवाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम को जोड़ा जाए।
- हर गोठान में चारा बैंक एवं पशु चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराई जाए।
- महिला स्व.सहायता समूहों को चारा उत्पादन एवं वर्मी कम्पोस्ट इकाइयों का संचालन सौंपा जाए।
- राज्य स्तर पर ष्गोठान उत्पाद ब्रांडष् स्थापित कर विपणन को प्रोत्साहित किया जाए।
- गोठानों की प्रगति का वार्षिक मूल्यांकन किया जाए ताकि दीर्घकालिक स्थिरता बनी रहे।

संदर्भ -

[1] छत्तीसगढ़ शासन,(2023), गोठान योजना रिपोर्ट, सतत ग्रामीण विकास की दिशा में पहल, रायपुर . पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग।
[2] मिश्रा, एस. के.,(2022), ग्रामीण संसाधन और भूमि उपयोगिता का अध्ययन, नई दिल्ली . अर्थशास्त्र प्रकाशन।
[3] वर्मा, पी. एवं चौबे, डी.(2021), गोठानों का पर्यावरणीय प्रभाव, बिलासपुर . ग्राम विकास शोध संस्थान।
[4] Government of Chhattisgarh, (2024), Narva, Garva, Ghurva, Bari Annual Report, Raipur: Rural Development Department.
[5] पांडेय, आर.(2020), भूमि उत्पादकता और ग्रामीण विकास, लखनऊ . भारतीय ग्राम्य अध्ययन संस्थान।